GISI Impact Factor 0.2310
नवम्बर-दिसम्बर २०१४
वर्ष-८ अंक-६
ISSN 0973-9777
ijraeditor@yahoo.in

MPASVO

IJRA

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रकाशन
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. द्वारा आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित
अन्य सहसंयोजन
* सार्कः अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका
* एशियन जर्नल ऑफ मार्डन एण्ड आयुर्वेदिक मेडिकल साइंस
वाराणसी, उ०प्र० (भारत)

नवम्बर-दिसम्बर २०१४
वर्ष-८
अंक-६
www.anvikshikijournal.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

प्रो. उमेश चंद्र दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, उ. प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल, डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. सपना भारती, डॉ. भावना गुप्ता, डॉ. राजेश, डॉ. रेनू कुमारी, डॉ. निशी रानी, डॉ. संगीता जैन, डॉ. आरती बंसल, डॉ. कला जोशी, डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. रानी सिंह, डॉ. स्वीटी बंदोपाध्याय, डॉ. अर्चना शर्मा, डॉ. पिन्टू कुमार, मधुलिका सिन्हा, डॉ. मधुलिका, डॉ. नीलू कुमारी, डॉ. मनीषा आमटे, डॉ. सुषमा पराशर, डॉ. सिद्धार्थ पाण्डेय, डॉ. मनोज कुमार राय, आशा मीणा, तन्मय चटर्जी, अनीता वर्मा, अनन्द रघुवंशी, नंद किशोर, रेनू चौधरी, श्याम किशोर, विमलेश कुमार सिंह, अखिलेश रध्वज सिंह, दिनेश मीणा, गुंजन, विनीत सिंह, नीलमणि त्रिपाठी, अंजू बाला, ब्रजेश कुमार, डॉ. इन्दुमती सिंह, रमेश चन्द

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजुकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत एवं व्यक्तिगत : भारतीय 5000+1000/-डाक शुल्क, एक प्रति 1200+100/- डाक शुल्क, वैदेशिक : 6000+डाक खर्च, एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387, टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन : महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन :एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

प्रकाशन तिथि : 1 नवम्बर 2014

मनीषा प्रकाशन

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-8 अंक-6 नवम्बर-2014

शोध प्रपत्र

कुछ प्रमुख उपनिषदों में स्त्री विमर्श -डॉ. मनीषा शुक्ला 1-5
वैदिक साहित्य में जीवन मृत्यु की सत्यता -डॉ. स्मिता द्विवेदी 6-7

पृथ्वी सूक्त : वनस्पति और औषधियों का स्रोत -डॉ. स्मिता श्रीवास्तव 8-10
"आशाशिशु" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा -सरोज बाला 11-15

परिवर्तन की प्रक्रिया क्रियान्वयन का उपाय -डॉ. संगीता जैन 16-19
हिन्दी भाषा का विकास -पूनम रानी 20-25

गोंडी बोली के लोकगीतों में रामकथा संदर्भ -डॉ. कला जोशी 26-30
नयी कहानी और कमलेश्वर -डॉ. अनुराग त्रिपाठी 31-34

डॉ. रामविलास शर्मा : गांधीजी का साम्राज्यविरोधी आन्दोलन -बिजय कुमार रबिदास एवं डॉ. अंशुमाला मिश्रा 35-38
डॉ. सूर्यनारायण द्विवेदी के उपन्यासों में पौराणिकता -सरोज बाला 39-42

बच्चों के अधिकार और बाल-श्रम की समीक्षा -डॉ. शेफालिका 43-46
ऊर्जा के नये स्रोत परमाणविक नहीं, प्राकृतिक होंगे -डॉ. अंजली श्रीवास्तव 47-49

मस्तिष्क के विभिन्न संरचनात्मक एवं क्रियात्मक पहलुओं पर चर्चा -डॉ. कन्हैया 50-53
सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 का विभिन्न शासकीय विभागों में प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 54-57
-डॉ. प्रमोद यादव एवं भूपेन्द्र कुमार

महात्मा गाँधी : राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता -कृष्ण कुमार तिवारी 58-62
संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एवं उनकी शक्तियाँ -राघवेंद्र सिंह 63-67

हिन्दी भाषा के विकास में शिक्षकों की भूमिका की अनिवार्य आवश्यकता -अशोक बैरागी 68-70
सांस्कृतिक समाजवाद के प्रणेता एवं शिक्षाविद् : आचार्य नरेन्द्र देव -डॉ. सुभाष मिश्र 71-74

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2014) 8,71-74
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 20 अक्टूबर 2014

सांस्कृतिक समाजवाद के प्रणेता एवं शिक्षाविद् : आचार्य नरेन्द्र देव

डॉ. सुभाष मिश्र*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *सांस्कृतिक समाजवाद के प्रणेता एवं शिक्षाविद् : आचार्य नरेन्द्र देव* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं *सुभाष मिश्र* घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

राजनीति को व्यापक सन्दर्भ में परिवर्तन की श्रृंखला के रूप में समझा जा सकता है। इसी अर्थ में इतिहास राजनीति के प्रति अपना अंशदान अर्पित करता है। यह परिवर्तन यदि क्रमिक और अहिंसक होते हैं तो सामान्यतः बिना कोई संवेदना पैदा किये हुये आगे बढ़ जाते हैं लेकिन जब परिवर्तन स्वाभाविक और अहिंसक न होकर अस्वाभाविक व हिंसक क्रांतियों के माध्यम से हाते हैं तो यह इतिहास की उल्लेखनीय घटना बन जाते हैं। इतिहास की ये उल्लेखनीय घटनाएं ही आगे आने वाले समय की राजनीति के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। प्रस्तुत संदर्भ में हम 1789 की फ्रांसीसी राज्य क्रांति का उल्लेख कर सकते हैं। जिसका मूल नारा- स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व था। फ्रांसीसी क्रान्ति और उसके नारे ने भविष्य की राजनीति के संदर्भों को अत्यधिक प्रभावित किया है। यूरोप में उभरे स्वातंत्र्यवाद अर्थात् उदारवाद, को आधार प्रदान करने वाली यही घटनायें थीं। अतिशय स्वतंत्रता से उपजी अराजकता अतिशय उदारता से उपजे पूंजीवाद ने स्वतंत्र्यवाद और व्यक्तिवाद के विकृत पक्ष को उजागर कर दिया और इसके विरोध में फ्रांसीसी क्रान्ति के नारे का दूसरा हिस्सा ''समानता'' लोकप्रियता प्राप्त करने लगा। इसी प्रभावित हो कर अनेक आन्दोलनों का संचालन किया गया। इन सभी का उद्देश्य एक ऐसी समतावादी न्यायोचित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना था जिसमें सभी लोग बिना किसी भेदभाव के अपनी स्वेच्छा से जीवन यापन कर सकें। इसी संदर्भ में विकसित हुआ आचार्य नरेन्द्र देव का समाजवादी चिंतन केवल राजनीति में अंशदान अर्पित करने तक ही सीमित नहीं रहा अपितु शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना अमूल्य योगदान अर्पित करता है। प्रस्तुत पत्र में आचार्य जी के समाजवाद एवं शिक्षा में उनके अंशदान का सिंहावलोकन किया गया है।

कोई भी विचारक जिस बौद्धिक, सामाजिक व सांस्कृतिक तथा आर्थिक वातावरण में पनपता है उसका प्रभाव उसके विचारों और कार्यों पर पड़ता है यह बात आचार्य नरेन्द्र देव पर भी लागू होती है। आचार्य नरेन्द्र देव ने अपने समय की सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था से पूर्णतः दुखी व असन्तुष्ट होकर सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन का एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त प्रस्तुत किया। आचार्य जी के नैतिक जीवन का आधार थी उनकी अन्याय के विरूद्ध क्रान्तिकारी विद्रोह की भावना जिसके कारण सारा जीवन उन्होंने अन्याय के विरूद्ध लड़ने में लगा दिया। उनका मानना था कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था ने मनुष्य को एक विशेष दिशा में मोड़कर शक्तिहीन और व्यक्तित्वहीन करके दास बना दिया है। समाजवाद ही वह मार्ग है जो मनुष्य को विवशता के क्षेत्र से हटाकर उसे स्वाधीनता के राज्य में ले जाना चाहता है, अन्याय और शोषण से मुक्त करके शोषण और वर्ग विहीन समाज

* शिक्षक शिक्षा विभाग, यूनिटी डिग्री कॉलेज लखनऊ (उत्तर प्रदेश) भारत

© लेखक 2014, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

में ले जाना चाहता है। 20वीं शताब्दी में विश्व के विभिन्न भागों में इन्ही समाजवादी आदर्शो से प्रभावित होकर अनेक राजनैतिक आन्दोलनों, संघर्षों तथा क्रान्तियों का संचालन हुआ। इन सभी का उद्देश्य एक ऐसी न्यायोचित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना था जिसमें सभी लोग शोषण, दमन, अनुचित पक्षपात, उत्पीड़न तथा क्रूरता की स्थितियों से मुक्त होकर बिना किसी भय और विवशता के अपनी रूचियों तथा क्षमताओं का सम्पूर्ण स्वतन्त्रता से रचनात्मक विकास कर सकें। यह सिद्धान्त अथवा समाजवादी आदर्श बडी तेजी से लोगों के दिलो-दिमाग में बैठने लगा। इसी बीच में भारत में समतावाद अथवा समाजवाद के अनेक संस्करण विकसित हुए। ऐसे ही संस्करणों में से एक है आचार्य नरेन्द्र देव की समाजवादी चिन्तन धारा जिसमें एक ओर मार्क्सवादी साम्यवाद का प्रभाव तो दूसरी ओर भारतीय परिस्थितियों की समझ और तीसरे पाश्चात्य प्रभावों को एक दूसरे के साथ अर्न्तग्रस्त देखा जा सकता है। आचार्य नरेन्द्र देव मार्क्सवाद, लेनिनवाद के गहन अध्येता थे तथा सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण हेतु एक शिक्षक की भांति उसका उपयोग करते थे। आचार्य नरेन्द्र देव की धारणा थी कि मनुष्य ''रोटी, शान्ति और स्वतंत्रता'' तीनो चाहता है और यह सब बातें सच्चे समाजवाद की स्थापना द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। आचार्य जी कहते हैं कि- समाजवाद' ही सच्चे मायने में लोकतंत्र की स्थापना कर सकता है, समाजवाद ही पूर्ण लोकतंत्र है, लोकतंत्र तो समाजवाद का प्राण है। लोकतंत्र की भावना और आदर्श, समाजवाद में ही निहित है जहां लोकतंत्र के बिना समाजवाद अपूर्ण है वहां समाजवाद के बिना लोकतंत्र असंभव है। इस तरह से नरेन्द्र देव जी समाजवाद द्वारा प्रतिपादित सामाजिक स्वतंत्रता, सामाजिक समता, सामाजिक न्याय एवं सामाजिक जनतंत्र के समर्थक थे। अपने समाजवादी चिन्तन में उन्होंने बराबर सामाजिक क्रान्ति का समर्थन किया। वे मानते थे कि समाजवाद की स्थापना के लिए वर्गसंघर्ष अनिवार्य है, जिसके द्वारा एक वर्गविहीन समाज की स्थापना सम्भव हो सके, जिसमें प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार विकास का समान और पूर्ण अवसर प्राप्त हो सके। वे अन्तिम समय तक अपने विचारों में सामाजिक क्रान्ति के प्रबल समर्थक रहे तथा उनके चिन्तन में प्रतिक्रियावाद के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को भारतीय संस्कार देने का कार्य किया। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, इतिहास की आर्थिक व्याख्या, वर्ग-संघर्ष तथा क्रान्ति के सम्बन्ध में उनके विचारों का अध्ययन करने पर नरेन्द्रदेव जी अनेक बार मार्क्सवाद के ऐसे व्याख्याता के रूप में प्रकट होते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे भारतीय परिस्थितियों के लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी ढंग पर कोई ऐसी प्रखर समाजवादी विचारधारा प्राप्त करना चाहते थे जिसे केवल भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण एशिया में लागू किया जा सके। एक सच्चे मार्क्सवादी की तरह वे मानते हैं कि समाज के आर्थिक ढांचे में परिवर्तन होता है। उन्होंने स्वीकार किया कि मार्क्सवाद समाज की प्रगति के नियमों का वैज्ञानिक विवेचन करने वाली एक नृतन विचारधारा है। आचार्य जी इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि मार्क्सवाद के दार्शनिक पक्ष द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के बिना सामाजिक विकास की प्रक्रिया को ठीक से नहीं समझा जा सकता। सारा जगत एक प्रक्रिया है और प्रतिक्षण उसमें रूपान्तर होता रहता है। विकास की गति में हर क्षण आन्तरिक असंगतियां उत्पन्न होती रहती हैं और इन्हीं असंगतियों के द्वारा ही नया रूपान्तर होता है। मार्क्सवादी ढंग पर ही पूंजीवाद का विश्लेषण करते हुए आचार्य जी ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि आन्तरिक असंगतियों के परिणामस्वरूप किस प्रकार समाज आदिम साम्यवादी युग से आरम्भ होकर आधुनिक युग की पूंजीवादी व्यवस्था तक पहुंचता है। पूंजीवाद को वे श्रम के शोषण पर आधारित एक त्रुटिपूर्ण व्यवस्था मानते हैं। उनका विचार है कि जिस तरह 'धर्म' मानवता को विकृत तथा खण्डित करता है उसी प्रकार उत्पादन की पूंजीवादी प्रक्रिया मानव श्रम के गौरव को नष्ट कर देती है। आचार्य जी का मत है कि पूंजीवादी उत्पादन जहां मुट्ठी भर पूंजीपतियों में सम्पत्ति को केन्द्रित करता है, वहां वह असंख्य अकिंचन भी पैदा करता है। इस सर्वहारा मजदूर के प्रति सहृदयता दर्शाते हुए वे स्वीकार करते हैं कि वर्तमान प्रणाली के दोषों को दूर करने का साधन सर्वहारा मजदूर ही है। वे मजदूर वर्ग को समाजवादी क्रान्ति का अग्रदूत मानते थे। मानव को शोषण मुक्त बनाने वाले मार्क्सवाद को अपना आदर्श स्वीकार करते हुए आचार्य जी ने कहा ''पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली के व्यापक प्रसार ने मार्क्सवाद को जन्म दिया है और मार्क्स ने जो व्यवस्था हमारे सम्मुख रखी वह प्राचीन काल से ही समाज में विद्यमान थी। समाज में आर्थिक विकास के कारण जो सर्वागीण परिवर्तन होता जा रहा है, वह द्वन्द्वात्मक ढंग से वर्ग संघर्ष के माध्यम से हुआ है। आचार्य जी ने मार्क्स के दोनों प्रमुख सिद्धान्तों- द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तथा वर्ग-संघर्ष को स्वीकार किया था। मार्क्सवादी विचारधारा में रचे-बसे आचार्य जी जब गांधी जी के सम्पर्क में आये तो उनके जीवन में एक नया अध्याय जुड़ गया, जिसके कारण वे गांधीवादियों के बीच मार्क्सवादी और मार्क्सवादियों के बीच गांधीवादी के रूप में पहचाने जाने लगे। यद्यपि उनका गांधी जी से अनेक बिन्दुओं पर

मतभेद भी रहा। आचार्य जी ने समाजवाद को एक राजनीतिक आन्दोलन के साथ ही एक सांस्कृतिक आन्दोलन भी स्वीकार किया। उनके मत में समाजवाद एक संस्कृति है, एक सभ्यता है, और एक जीवन शैली है। यह समाजवादी संस्कृति भारतीय संस्कृति के मानवीय तत्वों और पश्चिमी संस्कृति के लोकतांत्रिक और समाजवादी तत्वों का रचनात्मक संश्लेषण होगी। आचार्य जी समाजवाद को एक नया सामाजिक नीतिशास्त्र, एक नयी शैक्षणिक व्यवस्था ओर एक नयी प्रेरणदायी विचारधारा मानते थे। आचार्य जी का विचार था कि इस तरह विकसित हुआ सामाजिक मानवतावाद ही भारत में समाजवादी संस्कृति का आधार होगा। वे मार्क्स, एंगल्स, लेनिन तथा विभिन्न पार्टी थीसिसों को उचित ऐतिहासिक संदर्भ में उद्धृत कर सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण हेतु एक शिक्षक की भांति उसका उपयोग करते थे। अपने समाजवादी चिन्तन में उन्होंने बराबर सामाजिक क्रान्ति का समर्थन किया। वे मानते थे कि समाजवाद की स्थापना के लिए वर्गसंघर्ष अनिवार्य है, जिसके द्वारा एक वर्गविहीन समाज की स्थापना सम्भव हो सके, जिसमें प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार विकास का समान और पूर्ण अवसर प्राप्त हो सके। उनकी विशेषता इस बात में है कि वे अन्तिम समय तक अपने विचारों में सामाजिक क्रान्ति के प्रबल समर्थक रहे तथा उनके चिन्तन में प्रतिक्रियावाद के लिए कोई स्थान नहीं था। उनके व्यक्तित्व में मौलिक चिन्तन की क्षमता थी तथा वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारों में नवीन सूत्र जोड़ने की क्षमता रखते थे। इसीलिए कहा जाता है कि उन्होंने मार्क्सवाद- लेनिनवाद को भारतीय संस्कार देने का कार्य किया। मार्क्सवाद और लेनिनवाद के विचारों को स्वीकारते हुए ही आचार्य जी वैज्ञानिक समाजवादी के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, इतिहास की आर्थिक व्याख्या, वर्ग-संघर्ष तथा क्रान्ति के सम्बन्ध में उनके विचारों का अध्ययन करने पर नरेन्द्रदेव जी अनेक बार मार्क्सवाद के ऐसे व्याख्याता के रूप में प्रकट होते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे भारतीय परिस्थितियों के लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी ढंग पर कोई ऐसी प्रखर समाजवादी विचारधारा प्राप्त करना चाहते थे जिसे केवल भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण एशिया में लागू किया जा सके। एक सच्चे मार्क्सवादी की तरह वे मानते हैं कि समाज के आर्थिक ढांचे में परिवर्तन होता है। उन्होंने स्वीकार किया कि मार्क्सवाद समाज की प्रगति के नियमों का वैज्ञानिक विवेचन करने वाली एक नृतन विचारधारा है। उनका कहना है कि मार्क्सवादी दर्शन हमें बताता है कि विश्व का व्यापार कोई बना बनाया खेल नहीं है, यह किसी ढांचे के भीतर काम नहीं कर रहा है, इसका कोई स्थिर स्वरूप नहीं है, सारा जगत एक प्रक्रिया है और प्रतिक्षण उसमें रूपान्तर होता रहता है। उन्होंनें मार्क्स को वहीं तक स्वीकार किया जहां तक वह उसके व्यक्तित्व और राष्ट्रीय सामाजिक स्वतन्त्र्य में बाधक नहीं बनता था। इसीलिए उन्होंने माग्र्क्सवाद के अनेक सिद्धान्तों को स्वीकार करके भी उसके साथ जनतंत्र, मानवतावाद और संस्कृति का समन्वय करके विश्व के समाजवादी चिन्तन में एक नया आयाम जोड़ा। आचार्य जी ने कृषि क्रान्ति और समाजवादी क्रान्ति के योग पर जोर देकर और समाजवादी क्रान्ति के लिए मजदूरों और किसानों के संयुक्त मोर्चे की जरूरत बताकर तथा समता के आधार पर किसानों और मजदूरों के पारस्परिक सम्बन्ध कायम करने का पाठ पढ़ाकर मार्क्सवाद की दूसरी बड़ी समस्या का समाधान किया। आचार्य जी ने सहकारिता और समूहीकरण का मौलिक भेद बताकर और सहकारिता को समाजवादी व्यवस्था का अंग बनाकर उसके आधार पर किसानों की स्वेच्छा द्वारा ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था के निर्माण पर जोर दिया और इस तरह समूहीकरण के कारण समाजवाद के विरूद्ध किसानों के संघर्ष को शान्त करने का उन्होंने योग बताया। आचार्य जी किसानों को भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानते थे। इसीलिए उन्होंने समाजवादी आन्दोलन में किसानों की सह-भागिता पर बल दिया और आजादी के बाद गांवों के आर्थिक पुनर्निर्माण की वकालत किया। आचार्य जी ने समाजवाद को केवल भौतिकवादी विचारधारा तक ही नहीं सीमित रखा। उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने समाजवाद का आधार ''मानवता'' को घोषित किया और कहा कि समाजवाद का अभीष्ट मानवता है न कि भौतिकता। समाजवाद को मानवतावाद और नैतिकतावाद पर आधारित करते हुए आचार्य जी ने लोकतंत्र और संस्कृति को भी समाजवाद से जोड़कर समाजवाद को सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की योजना के रूप में प्रस्तुत किया। आचार्य जी ने अपना सारा समय जनतांत्रित समाजवाद और सांस्कृतिक समाजवाद के सिद्धान्तों और मूल्यों के प्रसार, नव-युवकों के नवनिर्माण तथा लेखन कार्य में लगाया। किसान आन्दोलन के सम्बन्ध में ही असहयोग आन्दोलन की पताका हाथ में लिए पं0 जवाहर लाल नेहरू 27 जनवरी, 1921 को अकबरपुर (फैजाबाद) के किसानों की सभा में पहुंचे। उनकी दृष्टि नरेन्द्रदेव जी पर पड़ी। नेहरू जी को काशी में विद्यापीठ की स्थापना की बात तथा उसके लिए नरेन्द्रदेव जी की उपयोगिता याद आयी। नरेन्द्रदेव जी काशी विद्यापीठ में काम करने को राजी हो गये। इस प्रकार 1921 से आचार्य जी काशी विद्यापीठ में अध्यापन करने लगे। आजादी के बाद राजनीति को अपनी कर्मस्थली बनाये रखने के साथ ही

शिक्षा-जग से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे। सौभाग्यवश 1947 में वे लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में वे छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों सभी के प्रिय रहे। इधर गांधी जी की मृत्यु के बाद राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव आया, परिणाम यह हुआ कि मार्च 1948 में आचार्य जी और उनके अन्य सहयोगी समाजवादियों को कांग्रेस छोड़ना पड़ा। कांग्रेस और विधानसभा से त्यागपत्र देकर 'समाजवादी दल' पृथक हो गया और आचार्य जी जीवनपर्यन्त उसके संगठन में निमग्न रहे। 1952 में वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। उस समय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय अशान्ति और अराजकता की आग में जल रहा था, आचार्य जी के आभामयी व्यक्तित्व ने स्थिति ही बदल दी। एक शिक्षाविद् के रूप में विद्यापीठ से आरम्भ हुआ यह सफर केवल इन विश्वविद्यालयों को अपना अंशदान अर्पित करने तक ही सीमित नहीं रहा। वे अध्ययन-अध्यापन एवं शैक्षिक प्रशासन के साथ-साथ विभिन्न शिक्षा सुधार समितियों में भी अपना योगदान देते रहे। इस प्रकार लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक समाजवाद के प्रणेता एवं शिक्षाविद के रूप में आचार्य नरेन्द्र देव का योगदान युग की एक बड़ी देन है।

सन्दर्भ सूची

देव आचार्य, नरेन्द्र (1938) -समाजवाद - लक्ष्य और साधन, काशी ज्ञान मण्डल

देव आचार्य, नरेन्द्र (1952) -राष्ट्रीयता और समाजवाद, काशी ज्ञान मण्डल

देव आचार्य, नरेन्द्र (1958) -साहित्य, शिक्षा और संस्कृति, काशी ज्ञान मण्डल

देव आचार्य, नरेन्द्र -बौद्ध धर्म दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

देव आचार्य, नरेन्द्र -सोशलिस्ट ही क्यों ? लखनऊ, मार्डन प्रिन्टर्स, एन0एम0एम0एल0

देव आचार्य, नरेन्द्र -साहित्य के नाम पत्र, लखनऊ, मार्डन प्रिन्टर्स, एन0एम0एम0एल0

देव आचार्य, नरेन्द्र (1951) -मार्क्सवाद और सोशलिस्ट पार्टी, लखनऊ

देव आचार्य, नरेन्द्र (1989) - व्यक्ति और प्रमुख विचार (सम्पा0) अजय कुमार, आचार्य नरेन्द्रदेव समाजवादी संस्थान, वाराणसी,

लाल, मुकुट बिहारी (1970) -आचार्य नरेन्द्र देव : युग और नेतृत्व, समाजवादी संस्थान, वाराणसी

लाल, मुकुट बिहारी (1985) -आचार्य नरेन्द्र देव : जीवन और सिद्धान्त, समाजवादी संस्थान वाराणसी

भसीन, प्रेम (1985) -भारत में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन, दिल्ली

भसीन, प्रेम मिश्र ,सुभाष (1989) -आचार्य नरेन्द्रदेव जन्मशती ग्रन्थ, यंग एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली, भारतीय समाजवाद एवं आचार्य नरेन्द्र देव, पोददार प्रकाशन, वाराणसी, 201